

घर से परसों की कहन गए श्याम ना आए बरसों बीत गए



घर से परसों की कहन गए श्याम,
ना आए बरसों बीत गए।bd।

देखे – परसों की कहके।

बरसों की तो कह गए मोहन,
कितु बिता दिए बरसों,
कब आवेगी बैरन परसों,
अखियन लागी तरसों,
अखिया लरसों निस दिन,
बरसे आठो याम
ना आए बरसों बीत गए,
घर से परसों की कहन गए श्याम,
ना आए बरसों बीत गए।bd।

ऋतु कंत आवे बसंत,
खेतन में फूली सरसों,
मिलन हेतु मे मुरलीधर सों,
घर ही घर में तरसों,
राधा वर सों मेरो,
कह दीज्यो प्रणाम,
ना आए बरसों बीत गए,
घर से परसों की कहन गए श्याम,
ना आए बरसों बीत गए।bd।

उजड़ी मथुरा बस गई अब तो,
बस्ती गई उजड़ सों,
मथुरा वाली अपनी है गई,
राधा है गई परसों,
मानो बृजवासी पे गयो,
विधाता हार,
ना आए बरसों बीत गए,
घर से परसों की कहन गए श्याम,
ना आए बरसों बीत गए।bd।



विषधर कालिया गयो है जब ते,
वंचित रही ज़हर सों,
मरने लायक नहीं रह गई,
लटकी रह अधर सों,
तडपत रह गई गयी,
गोपी कठिन कलेजा हार,
ना आए बरसों बीत गए,
घर से परसों की कहन गए श्याम,
ना आए बरसों बीत गए।bd।

घर से परसों की कहन गए श्याम,
ना आए बरसों बीत गए।bd।

गायक – आचार्य राजकृष्ण ।
9528028818
